नवांकुर विद्यापीठ, गंजबासौदा

क्रमशः

अंक 59 माह सितम्बर–2014

प्रति,

अन्दर के पृष्ठों पर

सार समाचार 1
✦
सम्पादकीय 4
✦
स्कूल–इन्फो 5
त्रिदिवसीय खगोलीय नवाचारी–विज्ञान–प्रशिक्षण
✦
संगीत विद्यालय 8
✦
रासेयो गतिविधि 9
✦
हिन्दी–दिवस 11
✦
कैरियर 13
✦
सम–सामायिक–इबोला 14
✦
शिक्षक की कलम 15
✦
बच्चों की कलम 17
✦
पूर्व छात्र मिलन समारोह 22
✦
नन्ही–कूची 24

दशहरा एवं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

सार समाचार

भारतीय रॉकेट विदेशी उपग्रहों को लेकर पहली बार पहुँचा–भारत की अन्तरिक्ष एजेंसी 'इसरो' ने एक बड़ा कदम बढ़ाया। अपने रॉकेट पीएसएलवी सी–23 से एक साथ पाँच विदेशी उपग्रह अन्तरिक्ष में स्थापित किये। यह पहली बार हुआ है कि भारतीय प्रक्षेपण–यान ने सब के सब विदेशी उपग्रहों के साथ उड़ान भरी है। इस ऐतिहासिक मौके पर प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी भी श्री हरिकोटा में मौजूद थे। इसके जरिये फ्रांस, जर्मनी, कनाडा व सिंगापुर से उपग्रह भेजने के लिए करार किये गये थे।

सामान्य वर्ग के छात्रों को भी दी जायेगी स्कॉलरशिप – अब छात्रों से भी किसी तरह का भेदभाव नहीं किया जायेगा। जिस तरह एससी, एसटी, अल्पसंख्यक और पिछड़ा वर्ग के छात्रों को स्कॉलरशिप दी जाती है, उसी तरह सामान्य वर्ग के छात्रों को भी दी जायेगी। यह बात मुख्यमन्त्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने विजय राघवगढ़ में आयोजित अन्त्योदय मेले के शुभारम्भ के अवसर पर कही।

जम्मू कश्मीर में दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे ब्रिज – देश में पेरिस के एफिल टॉवर से भी लगभग 35 मीटर ऊँचा पुल हिमालय

की गोद में बनाया जा रहा है। यह पुल दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे पुल होगा। यह जम्मू कश्मीर में चिनाब नदी पर कौरी में बनाया जा रहा है। यह पुल 359 मीटर (1177 फीट) ऊँचा तथा 1315 मीटर लम्बाई का होगा। वर्ष 2016 तक यह बनकर तैयार हो जायेगा।

बॉक्सर मेवेदार बने दुनिया के सबसे अमीर खिलाड़ी – अमेरिकी बॉक्सर फ्लॉयड मेवेदार दुनिया के सबसे अमीर एथलीट हैं। उनकी मौजूदा सालाना कमाई 105 मिलियन डॉलर (करीब 631 करोड़ रु.) है। फोर्ब्स मैगजीन ने अमीर एथलीटों की ताजा सूची जारी है। सूची में एकमात्र भारतीय महेन्द्रसिंह धोनी हैं। वे 30 मिलियन डॉलर (करीब 180 करोड़) की सालान कमाई के साथ 22 वें स्थान पर हैं।

आबादी में दिल्ली दुनिया में नम्बर दो पर–भारत की राजधानी दिल्ली दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला शहर बन गया। देश की व्यावसायिक राजधानी मुम्बई का स्थान छठा है। विश्व जनसंख्या–दिवस पर यूएन की एक रिपोर्ट के मुताबिक वर्ष 2014 में जापान की राजधानी टोक्यो के बाद दिल्ली की आबादी सबसे अधिक है। वर्तमान में दिल्ली की आबादी 2 करोड़ 50 लाख हो गयी है। टोक्यो की आबादी 3 करोड़ 80 लाख है।

आटा, पानी व तेल डालिये, एक के बाद एक रोटी बनायेगी मशीन – रोटी बनाने वाली एक ऑटोमैटिक मशीन दिखने में किसी माइक्रोवेव ओवन जैसी, मशीन के ऊपर दी गयी जगह में आटा, पानी और तेल डालिये। अपनी पसन्द की नरम या कड़क रोटी के मोड को सेट कीजिये और फिर मशीन का कमाल देखिये। किसी फोटोकॉपी मशीन की तरह एक मिनिट में एक रोटी बाहर आती जायेगी। इसे बनाया है, सिंगापुर में रह रहीं पुणे की मूल निवासी प्रणोती नागरकर और ऋषि इरानी ने। छह सौ डॉलर (लगभग 36 हजार रुपये) की रोटोमैटिक मशीन को अगले साल सिंगापुर में लांच किया जायेगा।

सीबीएसई ने सर्कुलर किया जारी कि इण्ट्रेस्ट से पढ़ायें संस्कृत – संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में रुझान बढ़ाने के लिए अब सीबीएसई ने भी अपना प्रयास शुरू कर दिया है। हाल ही में सीबीएसई ने इस सम्बन्ध में एक सर्कुलर जारी कर स्कूलों में संस्कृत भाषा को मॉडर्न इण्ट्रेस्ट के साथ पढ़ाने का आदेश दिया है। सीबीएसई ने स्कूलों को जुलाई में संस्कृत पर केन्द्रित संस्कृत–सप्ताह मनाने की बात कही है। इसमें संस्कृत पढ़ने और पढ़ाने दोनों ही दिशाओं में काम किया जायेगा।

एलईडी बल्ब देंगे 10 जीबी प्रति सेकण्ड तक की इण्टरनेट स्पीड – अब एलईडी बल्ब 10 जीबी प्रति सेकण्ड तक की इण्टरनेट स्पीड देंगे। इस हाईस्पीड इण्टरनेट टेक्नोलॉजी का नाम है लाई–फाई। यह आने वाले वक्त में वाई–फाई टेक्नोलॉजी की जगह लेगी। लाई–फाई (लाइट फिडेलिटी) टेक्नोलॉजी में रेडियो–तरंगों के बजाय प्रकाश–तरंगों का इस्तेमाल होता है। जहाँ तक प्रकाश पहुँचायेंगे, वहाँ तक इण्टरनेट भी पहुँचेगा, वह भी पलक झपकते।

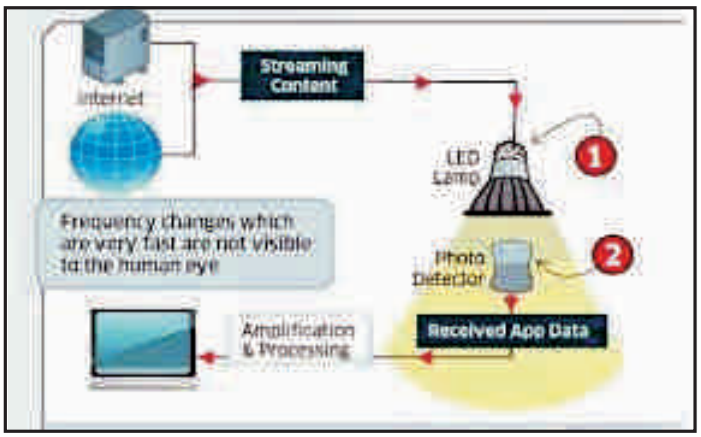

भारतीयों ने बनाया आवाज पर काम करने वाला रोबोट – कार्नेल यूनिवर्सिटी के सहायक प्रोफेसर आशुतोष सक्सेना ने रोबोट लैब में थ्री डी कैमरे से युक्त कई तरह की मानव आवाजों को पहचान कर निर्देशों के अनुरूप काम करने वाला रोबोट विकसित किया है। उन्होंने यह सफलता लैब में पूर्व विकसित कम्प्यूटर विजन सॉफ्टवेयर के जरिये हासिल की है। यह रोबोट मिले निर्देशों के तहत परिस्थितियों और आवश्यकताओं का आकलन करके उसी के अनुरूप काम करता है। जैसे चाय बनाने को कहा जाये, तो रोबोट खुद–ब–खुद पैन और स्टोव की पहचान करेगा। फिर आगे के कार्यों को सम्पादित करेगा।

जर्मन फुटबॉलर ने ब्राजीली बच्चों को दी 24 करोड़ की अपनी पूरी इनामी राशि – फुटबॉल–वर्ल्डकप जीतने वाली जर्मन टीम के खिलाड़ी मेसूत ओजिल ने नजीर पेश की है। उन्होंने अपनी पूरी इनामी राशि दान कर दी है, वह भी जर्मनी नहीं, बल्कि ब्राजील के बच्चों के लिए।

जर्मनी ने जीता फीफा वर्ल्डकप फाइनल – जर्मनी का 24 साल का इन्तजार खत्म हुआ। आखिरकार वह वर्ल्डकप

चैम्पियन बन गया। उसने खिताबी मुकाबले में अर्जेण्टीना को 1–0 से हराया। मैच का एकमात्र गोल सब्स्टिट्यूट खिलाड़ी मारियो गोएट्जे (113 वें मिनिट) ने अतिरिक्त समय में किया। यह जर्मनी का चौथा खिताब है। इसके पहले उसने 1990, 1974 और 1954 में यह खिताब अपने नाम किया। जर्मनी 8 बार खिताबी मुकाबले तक पहुँचा है।

फीफा वर्ल्डकप का रंगारंग समापन – ब्राजील की राजधानी रियो डी जेनेरिया में फीफा वर्ल्डकप 2014 का रंगारंग समापन हुआ। खेल के इस महाकुम्भ में 32 टीमों के 736 खिलाड़ियों ने 32 दिन तक जोर आजमाइश की। इस वर्ल्डकप का गोल्डन–बॉल अवार्ड अर्जेण्टीना के लियोनेल मेसी को, गोल्डन–बूट अवॉर्ड कोलम्बिया के रोड्रिग्ज को, गोल्डन–ग्लब्स अवॉर्ड जर्मनी के मेनुअल नेऊर को, यंग–प्लेयर अवॉर्ड फ्रांस के पॉल पोग्बा को, फेयर–प्ले अवॉर्ड कोलम्बिया को दिया गया।

साइना ने जीता सुपर सीरिज खिताब – भारतीय बैडमिण्टन स्टार साइना नेहवाल ने स्पेन की कैरोलिया मारिन को 21–18, 21–11 से पराजित कर पहली बार ऑस्ट्रेलियन सुपर सीरिज बैडमिण्टन चैम्पियन–शिप पर कब्जा कर लिया। साइना का इस साल का यह दूसरा खिताब है। इससे पहले जनवरी में उसने इण्डियन ओपन ग्राम्प्री जीती थी।

कटरा तक मिली ट्रेन की सौगात – प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने त्रिकुटा की पहाड़ियों पर स्थित माता वैष्णोदेवी मन्दिर जाने के लिए श्रद्धालुओं से ऊधमपुर ट्रेन को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया। उन्होंने कहा कि अब माता के दर्शन के लिए देश के विभिन्न क्षेत्रों से कटरा तक श्रीशक्ति एक्सप्रेस के नाम से ट्रेन चलायी जायेगी।

रूट और एण्डरसन ने 111 वर्ष पुराना रिकॉर्ड तोड़ा –इंग्लैण्ड के नाटिंघम में प्रथम टेस्ट में इंग्लैण्ड के मध्यक्रम के बल्लेबाज जो रूट (154) नाबाद और जेम्स एण्डरसन (81) ने दसवें विकेट के लिए 198 रन की रिकॉर्ड साझेदारी की। टेस्ट क्रिकेट में यह किसी टीम के बल्लेबाजों द्वारा दसवें विकेट के लिए अब तक की सर्वश्रेष्ठ साझेदारी भी है।

लॉर्ड्स पर 28 साल बाद ऐतिहासिक जीत – क्रिकेट के मक्का कहे जाने वाले लॉर्ड्स मैदान पर तेज गेंदबाज

ईशान्त शर्मा के 74 रन पर 7 विकेट के सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की बदौलत भारत ने दूसरे क्रिकेट टेस्ट में इंग्लैण्ड को 95 रनों से हराकर 18 वर्ष बाद ऐतिहासिक जीत दर्ज की।

सार–समाचार–संकलन – **सुनील भावसार,** उ.श्रे.शि.

बेटी

बेटा बारिश है, बेटी पारस है।
बेटा वंश है, बेटी अंश है।
बेटा आन है, बेटी शान है।
बेटा तन है, बेटी मन है।
बेटा मान है, बेटी गुमान है।
बेटा संस्कार है, बेटी संस्कृति है।
बेटा राग है, बेटी बाग है।
बेटा दवा है, बेटी दुआ है।
बेटा भाग्य है, बेटी विधाता है।
बेटा शब्द है, बेटी अर्थ है।
बेटा गीत है, बेटी संगीत है।
बेटा प्रेम है, बेटी पूजा है।

– कु. साक्षी ऊमरे,
कक्षा 12 गणित

सम्पादकीय

प्रिय विद्यार्थियो,

आप सभी के हाथों में क्रमशः का एक और अंक है। हमें विश्वास है कि क्रमशः का यह अंक आपके लिए रोचक व ज्ञानवर्द्धक होगा, क्योंकि विश्वास की आधारशिला सच्चाई पर आश्रित है। यदि कार्य पूर्ण निष्ठा, श्रम, लगन से किया जाये, तो उद्देश्य की पूर्ति अपने आप ही हो जाती है, उसके लिए अलग से परिश्रम की कोई आवश्यकता नहीं है। विश्वास एक ऐसी पूँजी है, जिसे हमसे कोई छीन नहीं सकता, परन्तु अपने ऊपर विश्वास करने के लिए हमें आत्मनियन्त्रण की भी आवश्यकता है, आत्मनियन्त्रण के अभाव में आत्मविश्वास की परिकल्पना सम्भव नहीं। यही कारण है कि कई बार विद्यार्थी परिश्रम तो करते हैं, पर आत्मनियन्त्रण के अभाव में उनमें आत्मविश्वास नहीं होता और वे आशातीत सफलताएँ अर्जित नहीं कर पाते। मैं इस बात के समर्थन में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन से जुड़े एक पहलू को आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ कि बचपन में गाँधी जी अँधेरे से बहुत डरते थे। उन्हें भय था कि अँधेरे से अचानक कोई भूत आयेगा और उन्हें पकड़ लेगा। एक बार की बात है कि घर में कोई नहीं था, अचानक रोशनी चली गई और मारे डर के गाँधीजी घबराने लगे, तभी अचानक उन्हें किसी के आने की आहट सुनाई दी। गाँधीजी और घबरा गये, तभी उन्होंने किसी तरह पीछे मुड़कर देखा, तो पाया कि उनकी आया खड़ी हुई थी। जब आया ने पूछा तो गाँधीजी ने बताया कि उन्हें भूत से डर लग रहा था। इस पर आया बोली–अगर भूत आ भी जाता, तो उसमें डरने की क्या बात है, तुम्हारे साथ भी तो 'राम' है। इतना सुनते ही गाँधीजी को यह विश्वास हो गया कि मेरे साथ 'राम' हैं और यही विश्वास जीवन भर उनके रहा। यहाँ तक कि अपने अन्तिम समय में भी गाँधीजी ने राम शब्द को नहीं छोड़ा। ऐसा विश्वास, ऐसी आस्था यदि हमारे अन्दर आ जाये, तो जीवन की बड़ी–से–बड़ी सफलता भी हमें तुच्छ लगेगी; परन्तु आवश्यकता है, तो केवल आत्मविश्वास, आत्म–नियन्त्रण व दृढ़ संकल्प की। कहा भी गया है –

''इंसानियत इंसान को इंसान बना देती है।
लगन हर मुश्किल को आसान बना देती है।
वरना कौन जाता, मन्दिर में भगवान को पूजने।
वह केवल आस्था ही है,
जो पत्थर को भगवान बना देती है।''

आपका
सन्दीप रावत,
सम्पादक

कौन हो तुम

कौन हो तुम जो भोर की पहली किरन के साथ,
मेरी बन्द पलकों को हौले से चूम जाती हो।
मेरे पाँवों के तलुओं को होठों से गुदगुदाती हो,
मेरे कपोलों पर अपना आँचल लहरा कर,
मस्त पवन सी झूम–झूम जाती हो।
मन्दिरों की घण्टियों की तरह टुनटुना कर,
भोर होने की प्यारी–सी खबर दे जाती हो।
खुशबू–सी महकती हो मेरी साँसों में,
मेरी धड़कन में हर रोज तुम धड़कती हो।
धूप के साये जब मेरे जिस्म को जलाते हैं,
बदली बन रिमझिम–सी बरस जाती हो।
हो जाता हूँ जब कैद अपने ही बियाबानों में,
रात के अँधेरे में जुगनू–सी चमक जाती हो।
कभी बिछ जाती हो कदमों में पत्नी की तरह
और प्रेमिका–सी मुझसे कभी रुठ जाती हो।
कुछ तो बताओ कौन हो तुम?
कहीं मेरी भटकी बिछड़ी जिन्दगी तो नहीं।

संकलित–विनोद कुमारी 'किरण'
कक्षा–11 कॉमर्स

स्कूल इन्फो

नवांकुर में त्रिदिवसीय खगोलीय नवाचारी विज्ञान–प्रशिक्षण–कार्यशाला का भव्य आयोजन

नवांकुर विद्यापीठ के नवीन परिसर में दिनांक 13 से 15 जून 2014 तक त्रिदिवसीय विज्ञान शिक्षकों का नवाचारी गणितीय/खगोलीय क्रियाशील मॉडल्स प्रशिक्षण–कार्यशाला का उद्घाटन डॉ. सुनील कुमार गर्ग, वैज्ञानिक म.प्र.विज्ञान एवं प्रौद्यौगिकी परिषद्, भोपाल, प्रो. ए.एन.गुप्ता, संचालक वराहमिहिर वैज्ञानिक धरोहर एवं शोध–संस्थान, उज्जैन, मुम्बई से आये स्रोत–व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी, दीपक सोनी कार्यक्रम समन्वयक तथा नवांकुर के प्राचार्य एस.के.दीक्षित द्वारा सरस्वती माँ की प्रतिमा पर माल्यार्पण द्वारा किया गया। विदिशा जिले की ज्ञान–पुंज टीम के सदस्य हरीश चौधरी, सौदानसिंह सूर्यवंशी, बलराम चौधरी भी इस दौरान उपस्थित थे।

इस त्रिदिवसीय कार्यशाला का आयोजन विज्ञान लोकप्रियकरण एवं सामाजिक–शोध–संस्था रायसेन के द्वारा म.प्र.विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद् के सहयोग से नवांकुर उ.मा.वि., गंजबासौदा में किया गया। उद्घाटन के अवसर पर अपने उद्बोधन में मुख्य अतिथि महोदय श्री सुनीलकुमार गर्ग ने कहा कि विकास के लिए विज्ञान होना बहुत जरूरी है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग विज्ञान को बढ़ावा देने हेतु अनेक योजनाएँ चला रहा है। विज्ञान एक बहुत रोचक विषय है। हालाँकि कुछ विद्यार्थी विज्ञान से दूर

भागते हैं और इसे बहुत कठिन मानते हैं, लेकिन इसके पीछे सामान्यतः उनका विज्ञान से ठीक तरह से परिचय नहीं होना है। अगर विद्यार्थी इस विषय की रोचकता से परिचित हो सकें, तो निश्चित ही यह विषय उनके लिए अन्य विषयों से ज्यादा सरल हो सकता है।

स्वागत उद्बोधन एवं त्रिदिवसीय कार्यशाला का प्रतिवेदन कार्यशाला–समन्वयक श्री दीपक सोनी के द्वारा दिया गया। प्रो. एस.एन.गुप्ता संचालक– वराहमिहिर–वैज्ञानिक धरोहर एवं शोध–संस्थान, उज्जैन ने अपने उद्बोधन में बताया, विज्ञान के होनहार विद्यार्थियों की प्रतिभा को पहचानने, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करने के लिए गुणवत्ता एवं आनन्ददायी शिक्षण आवश्यक हैं। आनन्द और विषय की गहराई से जोड़ने के लिए क्रियाशील मॉडल्स का प्रयोग आवश्यक है। मॉडल्स के द्वारा सिखाया ज्ञान कभी नहीं भूलने वाला एवं स्थायी ज्ञान होता है। स्रोत व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी ने कहा कि आज छात्रों में ज्ञान के प्रति ज्यादा जिज्ञासाएँ रहती हैं। अतः, पाठ्यक्रम

बनाते समय बच्चों के ज्ञान को भी महत्त्व देना चाहिए।

विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित ने कहा कि शैक्षणिक गुणवत्ता का विकास करने के लिए कक्षा में मॉडल निर्माण करना आवश्यक है। नवांकुर का सिद्धान्त, किताबी ज्ञान न देकर, प्रायोगिक कार्य करने के लिए छात्रों में सर्वांगीण विकास करना है। विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक श्री केशव लाहौरी ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

स्रोत व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी ने डे टाइम एस्ट्रोनॉमी, ऊँचाई–दूरी प्रयोग, नैनो सौरमण्डल के बारे में एवं कार्यक्रम–समन्वयक श्री दीपक सोनी द्वारा सूर्य–चन्द्र ग्रहण, मौसम चक्र, शुक्र–पारगमन मॉडल्स, रेट्रोग्रेड मोशन एवं रोटेशन मॉडल्स, पृथ्वी की सूर्य के सापेक्ष गति, यूरेनस गति, चन्द्रकला मॉडल्स, पाषाण खगोलीय यन्त्रों के प्रतिरूप मॉडल्स, चन्द्र–तल मॉडल्स, टेलिस्कोप–निर्माण, पृथ्वी–चन्द्र, गुरुत्वीय बल, यूरेनस की चाल एवं बुध ग्रह पर सूर्योदय–सूर्यास्त आदि की प्रक्रिया पर प्रयोग–प्रदर्शन किया गया, जिसमें शिक्षकों को बेहद आनन्द प्राप्त हुआ। शिक्षकों ने ऐसे कार्यक्रमों की निरन्तर आवश्यकता पर बल दिया, जिससे शिक्षक प्रौद्योगिकी में बदलाव पैदा किया जा सके।

कार्यशाला के दूसरे दिन – विभिन्न प्रायोगिक गतिविधियाँ आयोजित की गयी श्री दीपक सोनी ने क्रियाशील मॉडल्स निर्माण–प्रक्रिया के अन्तर्गत समझाते हुए बताया कि मॉडल्स के द्वारा छात्र के स्वतन्त्र रूप से सीखने, स्वामित्व एव अपनत्व की भावना का विकास, बस्ते का बोझ कम, सहपाठियों के साथ–साथ सीखने का अवसर एवं सुविधाजनक सीखने का वातावरण प्राप्त होता है। इसके द्वारा सीखा ज्ञान हमेशा मस्तिष्क में स्पष्ट रहता है तथा रटने की प्रवृत्ति से छात्रो को मुक्ति मिल जाती है।

स्रोत–व्यक्ति प्रो. एस.एन.गुप्ता, एक्सपर्ट नैनो टेक्नोलॉजी, वराहमिहिर वैज्ञानिक धरोहर एवं शोध–संस्थान, उज्जैन ने समझाया कि विद्यालय में आनन्ददायी शिक्षा का वातावरण सुलभ बनाकर, स्वयं सीखने की ओर प्रवृत्त, शिक्षक की चुनौतियों का सकारात्मक हल प्रस्तुत करने में शून्य लागत या लो कॉस्ट मॉडल्स प्रभावकारी सिद्व हुए हैं। उन्होंने मौसम–चक्र के मॉडल निर्माण एवं उसके उपयोग पर भी प्रकाश डाला।

स्रोत–व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी, नवनिर्मिती मुम्बई द्वारा टेलिस्कोप निर्माण, गणितीय संरचनाएँ, ज्यामितीय संरचनाएँ, दर्पण पर विभिन्न आकार बनाकर उसके प्रतिबिम्ब बनाना सिखाया। स्कूल के ग्राउण्ड पर नैनो सोलर सिस्टम बनाना सिखाया। डे टाइम एस्ट्रोनॉमी–आधारित मॉडल्स संरचना सिखायी। इन गतिविधियों से प्रशिक्षणार्थियों को बेहद आनन्द प्राप्त हुआ एवं उनके मन की कठिन अवधारणाएँ स्पष्ट हुईं।

भोजन–उपरान्त सन्ध्याकालीन सत्र में स्रोत–व्यक्ति श्री हरीश चौधरी, सौदानसिंह के प्रायोगिक सूर्य, सूर्य–चन्द्र– ग्रहण, मौसम–चक्र, शुक्र–पारगमन मॉडल्स, रेट्रोग्रेड मोशन एवं रोटेशन मॉडल्स, पृथ्वी की सूर्य के सापेक्ष गति, यूरेनस गति, चन्द्रकला मॉडल्स, पाषाण खगोलीय यन्त्रों के प्रतिरूप मॉडल्स के निर्माण एवं प्रयोगविधि को समझाया।

कार्यशाला के तीसरे दिन – तीसरे दिन कार्यशाला का समापन हुआ। समापन समारोह के मुख्य अतिथि जिला शिक्षा–अधिकारी विदिशा श्री एच.एन.नेमा, प्रो. ए.एन.गुप्ता, संचालक वराहमिहिर वैज्ञानिक धरोहर एवं शोध–संस्थान, उज्जैन, मुम्बई से आये स्रोत–व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी,

श्री दीपक सोनी, कार्यक्रम–समन्वयक के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। यह कार्यशाला विज्ञान–लोकप्रियकरण एवं सामाजिक शोध–संस्था, रायसेन के द्वारा म.प्र.विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी परिषद्, भोपाल के उत्प्रेरण में नवांकुर विद्यापीठ में दि. 13.6.14 से 15.6.14 तक आयोजित की गयी, जिसमें विद्यालय के 100 से अधिक शिक्षक/शिक्षिकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। नवांकुर के प्राचार्य एस.के.दीक्षित द्वारा श्री एस.एन. गुप्ता, श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी तथा कार्यक्रम– समन्वयक श्री दीपक सोनी का शाल श्रीफल तथा स्मृति–चिह्न भेंटकर अभिनन्दन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नेमा जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि ब्रह्माण्ड की जटिल गतिविधियों को समझना एवं अन्तरिक्ष में तैरते ग्रहों आदि से सम्बन्धित घटनाओं की संकल्पना कर लेना आमजन के लिए कठिन होता है जिसके बिना आकाशीय हलचल मानव मस्तिष्क में स्पष्ट नहीं हो पाती है। इससे जिज्ञासुओं में कई उलझनें पैदा हो जाती हैं। यहाँ निर्मित नवाचार क्रियाशील मॉडल्स के माध्यम से आमजन के मानस–पटल पर खगोलीय घटनाओं की कल्पना स्पष्ट हो जाती है। अन्तरिक्ष में क्या चल रहा है, यह वे अच्छी तरह से समझ जाते हैं।

प्रो. एस.एन.गुप्ता, संचालक वराहमिहिर वैज्ञानिक धरोहर एवं शोध संस्थान, उज्जैन, ने बताया कि प्राचीन खगोलविदों ने अपने प्रेक्षण एवं अनुसन्धान के आधार पर हमें ब्रह्माण्ड की जटिल जानकारियों को समझना आसान कर दिया है। उस दौर में संसाधन की कमी होते हुए भी जिज्ञासुओं ने खगोल–विज्ञान के क्षेत्र में अहम भूमिका निभाते हुए कई रहस्यों को उजागर कर दिया है। आज हम अपने आसपास की खगोलीय घटनाओं के सम्बन्ध में बहुत कुछ जान गये हैं, लेकिन यह जानकारी बड़ी–बड़ी प्रेक्षणशालाओं में कैद होकर रह गयी है, जबकि आकाशीय गतिविधियाँ हममें प्रेक्षण–क्षमता, बौद्धिक विकास एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करने के लिए सर्वाधिक सुगम मानी गयी है। आज के संसाधन–भरे युग में खगोल की जटिल घटनाओं की जानकारी प्राप्त करने के लिए बहुत–से माध्यम उपलब्ध हैं, किन्तु यह देखा गया है कि बेसिक जानकारी के अभाव में खगोल विज्ञान को समझना कठिन और उकताहट भरा महसूस होता है।

कार्यक्रम–समन्वयक श्री दीपक सोनी ने अपने उद्बोधन में कहा कि खगोलीय घटनाओं को मॉडल पर एक्शन के साथ प्रदर्शित करने से जिज्ञासुओं को घटना का प्रत्येक पहलू सहजता से समझ में आ जाता है और अन्तरिक्ष के बहुत–से गूढ़ रहस्य उनके मानस–पटल में उजागर हो जाते हैं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में स्रोत व्यक्ति श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी, मुम्बई ने विभिन्न गतिविधियों के अन्तर्गत टेलिस्कोप–निर्माण, पेड़ की ऊँचाई नापना तथा नैनो सोलर सिस्टम बनाना सिखाया।

विद्यालय के प्राचार्य एस.के.दीक्षित ने सम्बोधित करते हुए कहा कि खगोल विज्ञान के प्रायोगिक मॉडल विद्यार्थियों के लिए अधिक सार्थक सिद्ध होते हैं। साथ ही, इस प्रकार की कार्यशालाओं की निरन्तर आवश्यकता है, ताकि हम नवाचारों से निरन्तर अवगत होते रहें। स्रोत–व्यक्ति श्री हरीश चौधरी, सौदानसिंह, बलराम चौधरी ने इन मॉडल्स को विज्ञान क्लब/ईको क्लब के लिए उपयोगी बताते हुए सूर्य–चन्द्र–ग्रहण, मौसम–चक्र, शुक्र पारगमन मॉडल्स, रेट्रोग्रेड मोशन एवं रोटेशन मॉडल्स, पृथ्वी की सूर्य के सापेक्ष गति, यूरेनस गति, चन्द्रकला–मॉडल्स, पाषाण–खगोलीय यन्त्रों के प्रतिरूप मॉडल्स, चन्द्र–तल मॉडल्स, टेलिस्कोप–निर्माण, पृथ्वी–चन्द्र गुरुत्वीय बल, यूरेनस की चाल एवं बुध ग्रह पर सूर्योदय–सूर्यास्त आदि की प्रक्रिया पर प्रयोग–प्रदर्शन किया गया।

समापन के अवसर पर मुख्य अतिथि द्वारा समस्त शिक्षक–शिक्षिकाओं को प्रमाण–पत्रों का वितरण किया गया। विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार पिंगले ने स्वरचित कविता का वाचन किया, जिसमें प्रशिक्षकों तथा मुख्य शिक्षक–शिक्षिकाओं के नाम सम्मिलित थे। सन्दीप रावत ने कार्यक्रम का संचालन तथा शम्भूसिंह रघुवंशी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया।

सारे सद्गुण विनय से अधीन हैं,
विनय नम्रता से आती है,
अतएव जो व्यक्ति नम्र है, वही सद्गुण सम्पन्न है

नवांकुर संगीत विद्यालय में संगीत के छात्रों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया

दिनांक 10.05.14 एवं 11.05.14 में नवांकुर संगीत–विद्यालय में क्रियात्मक परीक्षा सम्पन्न हुई, जिसमें नवांकुर संगीत विद्यालय के 114 छात्र/छात्राओं ने अपनी–अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। उल्लेखनीय है कि विगत ग्यारह वर्षों से नवांकुर संगीत–विद्यालय नगर में संचालित है, जिसमें न केवल नवांकुर के विद्यार्थी, अपितु अन्य शैक्षणिक संस्थाओं के विद्यार्थी भी संगीत–शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। प्रतिवर्ष ग्रीष्मकाल में प्रातः 8.00 से 11.00 बजे तक एवं अन्य दिनों में 5.00 से 8.00 बजे तक संगीत की विशेष कक्षाएँ लगायी जाती हैं।

नवांकुर संगीत–विद्यालय की क्रियात्मक परीक्षा प्रयाग संगीत समिति द्वारा नियुक्त श्री बलवन्त पुराणिक (भोपाल) की उपस्थिति में सम्पन्न हुई, जिसमें प्रथम वर्ष से षष्ठ वर्ष (प्रभाकर) तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस क्रियात्मक परीक्षा में छात्र/छात्राओं ने मनमोहक तरीके से राग–यमन, भूपाली, विहाग काफी एवं बिलावल में छोटा ख्याल, आसावरी में बड़ा ख्याल, तराना, वृन्दावनी सारंग में ध्रुपद एवं देश दुर्गा व भैरवी में छोटा ख्याल, राग मालकोस में बड़ा ख्याल, ध्रुपद, पीलू, जोनपुरी, केदार, हमीर में छोटा ख्याल एवं धमार, राग देशकार एवं जय–जयवन्ती में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, राग दरबारी में बड़ा ख्याल, छायानट, विभास, राग रागेश्वरी, राग देशी में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, राग शुद्ध कल्याण में धमार एवं राग मिया मल्हार में ध्रुपद एवं अन्य रागों में छोटा–ख्याल ,ठुमरी, दादरा, गजल, टप्पा एवं गीत का गायन किया तथा तबला–वादन के छात्रों ने गायन के साथ तबले पर संगत की।

तबला–वादन में तीन ताल में पेशकारा, उठान, कायदा, पलटा, टुकड़ा, छोटी तिहाई, बड़ी तिहाई, ताल दादरा, कहरवा, एक ताल, चौताल, झप ताल आदि ताल को हाथों पर ताली देकर व तबले पर बजाकर बताया। छात्रों ने धमार ताल, एक ताल, आड़ा चार ताल, दीपचन्दी, सूत ताल आदि तालों को ताली देकर एवं एकगुन व दुगुन करके बताया।

इस दौरान संगीत–विद्यालय के आचार्य–गण रामकिशन राठौर, मुकेश शर्मा, कु. वन्दना भार्गव तथा शैलेन्द्र कुमार पिंगले ने अपना सहयोग प्रदान किया।

नवांकुर के छात्रों ने प्राप्त की नौ लाख रुपये की पुरस्कार राशि

दिनांक 16.6.2014 को भोपाल के मोतीलाल परेड ग्राउण्ड में आयोजित होने वाले मेधावी छात्र–सम्मान–समारोह में नवांकुर विद्यापीठ के 36 छात्रों को नौ लाख रुपये की राशि अर्थात् प्रत्येक छात्र–छात्रा को पच्चीस–पच्चीस हजार रुपये की प्रोत्साहन–राशि का चैक म0प्र0 के माननीय मुख्यमन्त्री श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा प्रदान किया गया।

उल्लेखनीय है कि म0प्र0 में जिन छात्रों ने सत्र 2012–13 अथवा 2013–14 में कक्षा 12वीं की परीक्षा में 85% या उससे अधिक अंक प्राप्त किये हैं, उन्हें प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से म.प्र. शासन के मुखिया माननीय श्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा 25,000 रुपये की प्रोत्साहन–राशि देने की घोषणा की गयी थी।

इस क्रम में नवांकुर विद्यापीठ के सत्र 2012–13 के जिन 10 छात्र–छात्राओं को ये राशि प्रदान की गयी। उनके नाम इस प्रकार हैं–कु. एकता शर्मा, ऋषभ दुबे, कु. मोनिका रघुवंशी, नीलेश कुमार सैनी, कु. पूजा रघुवंशी, कु. प्रियंका नरवरिया, रचित श्रीवास्तव, सौरभ रघुवंशी, कु. सुरभि पटवा, कु. आयुषी जैन। इसी प्रकार सत्र 2013–14 के लिए जिन 26 छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहन राशि प्रदान की गयी उनके नाम हैं– कु. आयुषी जैन, आकाश बाबू कुशवाह, आशीष कुमार सेन, कु. आयुषी समैया, भारत वाधवानी, कु.भारती बारोटिया, कु. छाया दाँगी, कु. दीक्षा जैन, कु. गोशिया खान, कु. झलक जैन, कु. मोनिका विश्वकर्मा, कु. निकिता रिछारिया, प्रसून तारण, प्रवेन्द्र सिंह, राहुल कुमार अहिरवार, राहुल यादव, कु. रश्मि दाँगी, रविन्द्र दाँगी, सत्यम पटवा, सौरभ साहू, कु. शिवानी आचवल, शोभित महलवार, कु. सोनाली ठाकुर, कु. सोनम लोधी, कु. उमा दाँगी। पुरस्कृत होने वाले सभी छात्रों की भोजन और आवास–व्यवस्था अशासकीय स्कॉलर होम पब्लिक स्कूल, भोपाल तथा छात्राओं की भोजन और आवास व्यवस्था शासकीय कन्या सरोजिनी नायडू उ0मा0वि0 शिवाजीनगर भोपाल में की गयी थी।

नवांकुर–परिवार ने प्रोत्साहन–राशि प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं और उनके अभिभावकों को बधाई और शुभकामनाएँ दी हैं।

रासेयो का उन्मुखीकरण कार्यक्रम सम्पन्न

नवांकुर विद्यापीठ की राष्ट्रीय–सेवा–योजना इकाई का छात्र–उन्मुखी–कार्यक्रम बड़े ही उत्साह एवं प्रसन्नता पूर्वक सम्पन्न हुआ, जिसमें विद्यालय के लगभग 150 स्वयंसेवकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप–प्रज्वलन एवं माल्यार्पण से हुआ। इस अवसर पर स्वयंसेविका कु. ज्योति आदिवासी एवं कु. भावना विश्वकर्मा द्वारा सरस्वती वन्दना का गायन एवं कु.प्राची मिश्रा द्वारा अतिथियों का रोली–अक्षत द्वारा स्वागत किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में कार्यक्रम–अधिकारी शम्भूसिंह रघुवंशी ने राष्ट्रीय सेवा योजना के विभिन्न कार्यक्रमों की जानकारी देकर रासेयो के पुरस्कारों के बारे में बताया। संगीत–विद्यालय के शिक्षक रामकिशन राठौर ने रासेयो के प्रमुख गीतों से अवगत कराया। विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य पहलवान सिंह राजपूत ने विगत वर्षों के स्वयंसेवकों के व्यक्तित्व व उनकी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

रासेयो के पूर्व कार्यक्रम–अधिकारी सन्दीप रावत ने रासेयो के महत्त्व को बताते हुए प्रेरणा–पुरुष विवेकानन्द के सिद्धान्त व मार्गदर्शन पर चलने पर बल दिया। स्वयंसेवक विनय सोनी ने रासेयो के बैज व उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। स्वयंसेविका मुस्कान जैन ने पिछले कैम्प की जानकारी दी। इस अवसर पर विद्यालय के वरिष्ठ आचार्य श्री सन्दीप जेतली, कु. वन्दना भार्गव, श्री विजय शर्मा व राजेन्द्र सिंह यादव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में बालिका–इकाई प्रभारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव द्वारा कला–प्रशिक्षण–शिविर व बालिकाओं की विभिन्न योजनाओं की जानकारी सभी के बीच रखी और उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया। ''हम होंगे कामयाब'' गीत से कार्यक्रम का समापन हुआ।

नवांकुर रासेयो के छात्र/छात्राओं ने किया वृक्षारोपण

नवांकुर उ.मा. विद्यालय के रासेयो के छात्र/छात्राओं ने संस्था के नवीन परिसर में वृक्षारोपण की एक अभिनव पहल की। ''एक स्वयंसेवक – एक वृक्ष पालक'' की तर्ज पर प्रत्येक स्वयंसेवक ने अपने नाम से संस्था द्वारा प्रदत्त पौधे का रोपण किया और वही स्वयंसेवक अपने पौधे के रोपण से लेकर उसके पल्लवन एवं अभिवृद्धि तक सम्पूर्ण देखभाल करेंगे। भविष्य में वह वृक्ष सम्बन्धित स्वयंसेवक की पहचान होगा। इस प्रकार संस्था का वह छात्र एक अमर वृक्ष के रूप में अपनी उपस्थिति हमेशा–हमेशा के लिए दर्ज कर देगा।

इस अभिनव पहल के प्रेरणा–स्रोत एवं दिशा निर्देशक संस्था के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार दीक्षित ने अपने अथक प्रयास एवं परिश्रम से अशोक, वाटरपाम, अर्जुन, कचनार, सप्तपर्णी, गुलमोहर, शमी, चम्पा आदि लगभग 15 प्रकार के विभिन्न प्रजातियों के पौधों का चयन कर विद्यार्थियों को प्रदत्त किये। पौधारोपण से सम्बन्धित विधि एवं सावधानियों से छात्रों को अवगत कराया तथा समुचित पल्लवन के आवश्यक निर्देश दिये एवं अपनी उपस्थिति में पौधा रोपण कार्यक्रम सम्पन्न कराया। प्रथम पौधा रासेयो के छात्र अंकित अभ्यंकर, कक्षा 12 ने रोपित किया, तत्पश्चात् अपने–अपने नाम से अपने–अपने क्रम के अनुसार 82 छात्र/छात्राओं ने 82 पौधों का पौधारोपण किया। इस अवसर पर कार्यक्रम–अधिकारी श्री शम्भूसिंह रघुवंशी एवं श्रीमती रेणु श्रीवास्तव भी छात्र/ छात्राओं को निर्देशित करते रहे। विशेष रूप से उपस्थित विज्ञान–शिक्षक श्री अविनाश डोंगरे ने अपने वानस्पतिक ज्ञान से छात्रों को उचित मार्गदर्शन दिया एवं पी.टी.आई. श्री विजय शर्मा छात्रों को विभिन्न शारीरिक कौशलों से अवगत कराते रहे, जिससे छात्र/छात्राओं को वृक्षारोपण में सुविधा हो सके।

नवांकुर में रासेयो के तत्वावधान में मेहँदी-प्रतियोगिता सम्पन्न

दिनांक 09.8.2014 को स्थानीय नवांकुर विद्यापीठ में रक्षा-बन्धन के पावन पर्व पर राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में एक मेहँदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय की कक्षा 9 से 12 तक की 110 छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रतियोगिता में सभी प्रतिभागी छात्राओं ने तरह-तरह की मनमोहक मेहँदी डिजाइनों का प्रदर्शन किया, जिसे देखकर प्रतिभागियों की बड़ी सराहना की गयी। इस प्रतियोगिता में कक्षा 9 की छात्रा कु. रंजना अहिरवार ने प्रथम, कु. वन्दना जोशी ने द्वितीय, कु. सिमरन राजपूत ने तृतीय, कक्षा 10 की छात्रा कु. निशाद खान ने प्रथम, कु. कंचन रघुवंशी ने द्वितीय तथा कु. आकांक्षा बैरागी ने तृतीय स्थान, कक्षा 11 की छात्रा कु. पूनम श्रीवास्तव ने प्रथम, कु. नीलिमा ने द्वितीय, कु. रितिका ने तृतीय तथा कक्षा 12 की छात्रा कु. जया सोनी ने प्रथम, कु. ज्योति और कु. ऋतु सूर्यवंशी ने द्वितीय तथा कु. रवीना ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता विद्यालय की रासेयो बालिका-इकाई-प्रभारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव के निर्देशन में सम्पन्न हुई जिसमें विद्यालय की शिक्षिका कु. वंदना भार्गव, कु. पूजा जैन, कु. भावना सोनी, श्रीमती गरिमा पुरोहित व श्रीमती रश्मि श्रीवास्तव ने भी सहयोग प्रदान किया। डॉल्फिन स्कूल की शिक्षिका कु. नीतू तनवानी, कु. नीतू लोधी. कु. खुशबू अग्रवाल इस प्रतियोगिता की निर्णायक थीं।

नवांकुर विद्यालय में स्वतन्त्रता की 68वीं वर्षगाँठ का भव्य आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य शैलेन्द्र

स्वतन्त्रता दिवस पर नवांकुर में 35 विद्यार्थियों को गणवेश का हुआ निःशुल्क वितरण

कुमार दीक्षित ने ध्वजारोहण किया। छात्र-छात्राओं द्वारा राष्ट्रगान, मध्यप्रदेश गान का गायन किया गया। तत्पश्चात् छात्र-छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। इस पुनीत पर्व पर नागरिक सेवा-समिति के अध्यक्ष श्री कान्ति भाई जी शाह के सहयोग से आर्थिक रूप से कमजोर छात्र-छात्राओं को निःशुल्क गणवेश तथा बैग प्रदान किये। उल्लेखनीय है कि नगर के समाजसेवी श्री कान्तिभाई जी शाह ने विद्यालय में अध्ययनरत् आर्थिक रूप से कमजोर छात्र-छात्राओं की सहायतार्थ 10000 रुपये की दान राशि प्रतिवर्ष देने की घोषणा राष्ट्रीय सेवा-योजना के ग्राम बालराकलाँ में आयोजित विशेष शिविर में की थी। विद्यालय-परिवार ने समिति के इस कार्य की सराहना की है।

इस दौरान श्रीमती श्रद्धा टिल्लू द्वारा बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिये जाने वाले श्रद्धा-

पुरस्कार के अन्तर्गत कु. शेख रमीम पुत्री श्री शेख साबिर, कक्षा 8 तथा कु. शिवानी राय पुत्री श्री विनोद राय, कक्षा 10 को बालिकाओं में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर दो–दो हजार रुपये की राशि का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। इसी क्रम में स्व. लक्ष्मी नारायण खन्ना की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती लक्ष्मी देवी खन्ना द्वारा अनिकेश दुबे पुत्र श्री मनीष दुबे, कक्षा–10 तथा आशीष कुमार सेन पुत्र श्री रामस्वरूप सेन, कक्षा–12 (गणित संकाय) को सर्वाधिक अंक प्राप्त करने पर एक–एक हजार रुपये की राशि का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। रासेयो की बालिका–इकाई–प्रभारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव द्वारा भी अनिकेश दुबे पुत्र श्री मनीष दुबे को 1100 रुपये का शिरोमणि–मेधावी–पुरस्कार प्रदान किया गया।

इस अवसर पर डॉल्फिन स्कूल के छात्र–छात्राओं द्वारा भगवान् विष्णु के दशावतार पर आधारित 'नमो नारायणा' मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया गया। विद्यालय में आयोजित गायन, मेहँदी और भाषण–प्रतियोगिताओं में प्रत्येक कक्षा में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले तथा 5–5 अन्य छात्र–छात्राओं को भी सांत्वना पुरस्कार के रूप में शील्ड और प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अन्त में सभी छात्रा–छात्राओं को मिष्ठान वितरण किया गया।

माह सितम्बर–अक्टूबर २०१४ में जन्म दिन वाले विद्यार्थियों को जन्म दिन की हार्दिक शुभ–कामनाएँ

हिन्दी दिवस पर नवांकुर में वाद–विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गयी

गत दिवस नवांकुर विद्यापीठ में हिन्दी दिवस के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्त्वावधान में एक वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसका विषय था– ''वर्तमान परिवेश में हिन्दी की प्रासंगिकता'' । इस प्रतियोगिता में छात्र–छात्राओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। अपने उत्कृष्ट वक्तव्य से कु. स्तुति जैन, कक्षा 11 ने पक्ष और कु. क्षमा राय, कक्षा 11 ने विपक्ष में बोलकर प्रथम स्थान प्राप्त किया, जिन्हें पुरस्कृत किया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के वरिष्ठ अध्यापक श्री शैलेन्द्र कुमार पिंगले ने की, जिन्होंने अपने उद्बोधन में हिन्दी की दुर्दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए राजनेता तथा अभिनेता आदि को जिम्मेदार माना। पूर्व रासेयो के प्रभारी और कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री हरिओम शरण शर्मा ने हिन्दी के महत्त्व को बताया। वहीं विद्यालय के शिक्षक सन्दीप रावत ने अपने उद्बोधन में हिन्दी–दिवस के प्रारम्भ और हिन्दी की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। विद्यालय के शिक्षक श्री सुनील भावसार ने अपने सम्बोधन में हिन्दी के महत्त्व को बताते हुए कहा कि हिन्दी के अच्छे दिनों की शुरूआत हो गयी है। हिन्दी एक समृद्ध भाषा है, जो गंगा नदी की तरह है। रासेयो प्रभारी श्री शम्भूसिंह रघुवंशी ने हिन्दी की वर्तमान दशा पर चिन्ता व्यक्त करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि आजादी के 66 वर्षों बाद भी हिन्दी देश की राजभाषा नहीं बन पायी है। कार्यक्रम में डॉल्फिन स्कूल के प्राचार्य श्री रमेश शर्मा, विद्यालय के शिक्षक रामकिशन राठौर, श्री सन्दीप जेतली उपस्थित थे। कार्यक्रम के अन्त में रासेयो की बालिका–इकाई–प्रभारी श्रीमती रेणु श्रीवास्तव ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।

थ्री डी आकृति और प्रकृति में इसकी भूमिका विषय पर नवांकुर में कार्यशाला आयोजित

गंजबासौदा, नवांकुर विद्यापीठ में हाईस्कूल के विद्यार्थियों के लिए थ्री डी आकृति और प्रकृति में इसकी भूमिका विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें विद्यालय के हाईस्कूल–विभाग के 610 छात्र–छात्राएँ सम्मिलित हुए। इस कार्यशाला में नवाचारी संस्था नव–निर्मित मुम्बई से पधारे श्री पुरुषोत्तम त्रिपाठी ने अनेक रोचक ज्ञानवर्द्धक जानकारियाँ विद्यार्थियों को दीं।

आपने ठोसों की संरचना, थ्री डी आकृति, नैनो टेक्नोलॉजी, गोल्डन रेशियो के अनुसार प्रकृति की हर वस्तु को विज्ञान से जोड़कर दिखाया। गोल्डन लाइन, गोल्डन रेशियो, गोल्डन रेक्टेंगल, गोल्डन स्पायरल ये पृथ्वी की हर वस्तु में मिलते हैं। पृथ्वी की हर वस्तु में गोल्डन रेशियो पाया जाता है। नैनो तकनीकी की मदद से सौर–मण्डल के ग्रहों की स्थिति एवं उनके आकार के बारे में छात्रों को समझाया। परमाणुओं के आकार व तत्त्वों के आकार–प्रकार के बारे में जानकारी दी। विभिन्न प्रकार के गणितीय आकृतियों, फलक, शीर्ष और भुजाओं का समन्वय तथा कोणों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार थ्री डी आकृतियो का उपयोग हमारे दैनिक जीवन में तथा ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से रोचक रूप से सम्बद्ध है। थ्री डी संरचनाओं के उपयोग से शिक्षण विधि अधिक सहज की जा सकती है। छात्र–छात्राओं ने रोचक प्रश्नों के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किया। इस अवसर पर विद्यालय–परिवार के सभी शिक्षक–गण भी उपस्थित थे।

हिन्दी के महत्त्व पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन 'पत्रिका–समूह' द्वारा दि. 12 सितम्बर को ''हिन्दी की प्रासंगिकता आज के दौर में'' विषय पर, किया। जिसमें विद्यालय के 60 विद्यार्थियों ने अपनी भागीदारी की।

कैरियर

भारतीय सेना में कैरियर बनाने के लिए नवांकुर में कैरियर प्रकोष्ठ का आयोजन

नवांकुर के नवीन भवन में कैरियर प्रकोष्ठ का आयोजन किया गया, जिसमें हायर सेकण्डरी विभाग के विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस प्रकोष्ठ में सेना में कार्यरत नवांकुर के पूर्व छात्र विनेन्द्र कुमार दीक्षित ने भारतीय सेना में अपना कैरियर बनाने के लिए छात्रों को मार्गदर्शन दिया और अपने अनुभवों से उन्हें लाभान्वित किया। भारतीय सेना के अनेक पदों पर भर्ती हेतु महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ छात्रों को दीं। सभी छात्रों ने इस अवसर का भरपूर लाभ उठाते हुए श्री दीक्षित से अनेक प्रश्न पूछे और श्री दीक्षित ने उनकी समस्याओं का उचित समाधान प्रस्तुत किया। विद्यालय-परिवार ने श्री दीक्षित का आभार व्यक्त किया।

शिक्षक-दिवस-2014
नवनिर्वाचित विधायक ने किया शिक्षकों का सम्मान

शिक्षक दिवस पर नवांकुर के 8 शिक्षकों एवं कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति देने वाली छात्राओं को माननीय विधायक महोदय श्री निशंक कुमार जैन द्वारा सम्मानित किया गया।

रक्षाबन्धन पर्व पर डॉल्फिन के बच्चों ने बनाई रंग-बिरंगी राखियाँ

सम-सामायिक

'इबोला'

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) ने पश्चिम अफ्रीका में 'इबोला' विषाणु से फैल रही महामारी को अंतराष्ट्रीय स्वास्थ्य आपात स्थिति घोषित किया और प्रभावित देशों की मदद के लिए सहायता की अपील की। यह निर्णय संयुक्त राष्ट्र की स्वास्थ्य संस्था की आपात समिति की जिनेवा में आयोजित दो दिवसीय बैठक के बाद लिया गया।

इस वर्ष की शुरुआत में गिनी में फैलने के बाद इबोला से अब तक कम से कम 932 लोगों की मृत्यु हो गई और अब ततक 1700 से अधिक लोग इससे संक्रमित हैं। इबोला प्रभावित पश्चिमी अफ्रीकी देशों जिसमें लाइबेरिया, गिनी और सिएरा लियोन शामिल हैं, में आपातकाल घोषित कर दिया गया है।

इस बीमारी के बारे में कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य

1. इबोला वायरस बीमारी (ईवीडी) एक गंभीर मानव रोग है।
2. इबोला वायरस को पहले इबोला रक्तस्रावी बुखार (इबोला हेमरैजिक फीवर) के नाम से जाना जाता था।
3. ईवीडी का प्रकोप आम तौर पर ऊष्ण कटिबंधीय वर्षा वन के पास स्थि मध्य और पश्चिम अफ्रीका के गांवों में देखा गया।
4. यह वायरस संक्रमित जानवरों खासकर पटीरोपोडाडी परिवार के चमगादड़ों के सम्पर्क में आने से फैलता है।
5. इबोला वायरस से संक्रमित लोगों में दो से तीन दिनों बाद लक्षण नजर आते हैं। ये लक्षण बुखार, गले में खराश, सिरदर्द, उल्टी, मांसपेशियों में दर्द आदि हो सकते हैं। बुरी स्थितियों में व्यक्ति को डायरिया के साथ लीवर और किडनी संबंधित परेशानियां हो सकती हैं।
6. इबोला वायरस से संक्रमित मरीजों को गहन देखभाल की जरुरत होती है। ऐसे मरीजों को बचाने के लिए अब तक कोई विशेष उपचार या दवाएं उपलब्ध नहीं हैं।
7. इबोला वायरस के पता सबसे पहले वर्ष 1976 में चला था, जब इसने सूडना और कांगों के यामबुकु में लोगों को संक्रमित किया था। यामबुकु इबोला नदी के पास स्थित एक गांव है। इबोला वायरस नाम इसी नदी के नाम पर रखा गया है।
8. लंदन स्कूल ऑफ हाइजीन एण्ड ट्रापिकल मेडिसिन के प्रो. पीटर पायट ने कांगों में मरणासन्न कैथोलिक नन के खून के नमूने से वर्ष 1976 में इबोला वायरस की खोज की थी।

जेडमैप

ईबोला का वर्तमान प्रकोप इसकी खोज के बाद से अब तक सबसे खतरनाक प्रकोप है। फिलहाल इस बीमारी का कोई इलाज नहीं है। मैप फार्मास्युटिकल ने इस वर्ष अगस्त के पहले सप्ताह में जेडमैप नाम की दमा लायबेरिया में ईबोला संक्रमित मरीजों के सम्पर्क में आकर इसकी शिकार हुए दो डॉक्टरों केंट ब्रांटली और नैंसी राइबो को दिया था और फिर इसे स्पेन की सरकार को ईबोला से प्रभावित मरीजों के इलाज के लिए उपलब्ध कराया था।

ईबोला संक्रमण का इलाज करने के लिए यह दवा आनुवांशिक रुप से परिवर्तित ईबोला प्रोटीन के तम्बाकू के पत्तों में डालकर निष्क्रिय टीकाकरण की नई विधि का प्रयोग करता है। हालांकि जेडमैप का परीक्षण अभी तक सिर्फ बन्दरों पर ही किया गया है और स्वास्थ्य मानव सेवकों पर इसका परीक्षण वर्ष 2015 में किया जाना है। ईबोला के अचानक आए इस प्रकोप ने पूरी प्रक्रिया को तेज कर दिया है।

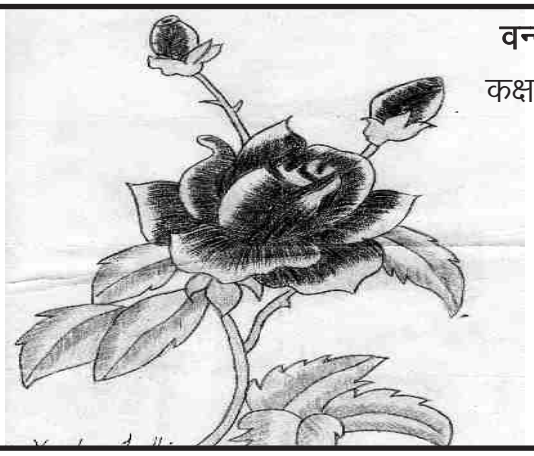

वन्दना लोधी
कक्षा 10–एफ

शिक्षक की कलम

गाँधी का भारत

गाँधी तेरे देश का, ये कैसा हाल हो रहा,
तेरा रामराज्य यहाँ, सिसकियों में रो रहा।
भारत जब से आजाद हुआ है,
अपनों से ही बरबाद हुआ है।
जो सत्ता में आता है, बड़ी–बड़ी कसमें खाता है
घोटालों–पे–घोटाले कर, विदेशों में खाते चलाता है।
कागजों पर ये नेता रेखा गरीबी की बनाते हैं,
और कागजों पर ही केवल, ये गरीबी मिटाते हैं।
देश के ये भ्रष्ट नेता, मिल के देश खा रहे।
अहिंसा का पाठ तेरा, हिंसा में बदल रहे।
जिन्होंने नोटों के बदले, वोटों को इक व्यापार बना दिया।
उन गुण्डों के हाथों में, हमने लोकतन्त्र को थमा दिया।
देशभक्त शहीद न होते, तो क्या आजादी मिल सकती थी।
सोचो जरा क्या चैन अमन की कलियाँ खिल सकती थीं।
भ्रष्टाचार से रौंद रहे, ये भारत की तकदीरों को।
गाली दे रहे हैं जैसे, भारत के वीर शहीदों को।
यह कैसी राजनीति की मार है, घट–घट में भ्रष्टाचार है।
यदि यही जनता की सरकार है, तो फिर क्यों हाहाकार है।
भ्रष्टाचार में सबसे आगे, देश का ऐसा नाम किया।
देश की पावन माटी को, दुनिया में बदनाम किया।
भ्रष्ट नेताओं ने देश का, इतिहास कलंकित कर डाला।
ऐसा लगता है गंगा में, जहर हलाहल भर डाला।
देशभक्तों के बलिदानों को, आज हमने भुला दिया।
भ्रष्ट नेताओं को देश का, बादशाह बना दिया।
इन लोगों ने कभी तिरंगे का, मान नहीं सीखा।
अपनी जननी जन्म भूमि का, सम्मान नहीं सीखा।
आज बापू के सपने सारे, क्षार–क्षार हो रहे।
तिरंगे के तीनों रंग भी, शर्मसार हो रहे।
आजाद का ये भारत देश, मान अपना खो रहा।
अखण्ड भारत देश आज, खण्ड–खण्ड हो रहा।
गाँधी तेरे देश का, ये कैसा हाल हो रहा।
तेरा रामराज्य भी यहाँ, सिसकियों में रो रहा।

– **कु. प्रीति चतुर्वेदी**, व्याख्याता (अंग्रेजी)

विज्ञान की जानकारी

01. नीला व्हेल विश्व का सबसे विशालतम प्राणी है, जो लगभग 30 मीटर लम्बा होता है।
02. सबसे बड़ी पत्ती विक्टोरिया रीजिया की होती है।
03. सबसे बड़ा फल लोडोरीसिया का होता है।
04. सबसे छोटे बीज ऑर्किड्स के होते हैं।
05. विश्व का सबसे बड़ा फूल रैफ्लीसिया होता है।
06. विश्व का सबसे विकसित जीव मनुष्य है।
07. प्रथम जीव की उत्पत्ति समुद्री जल में हुई।
08. अब तक लगभग सत्रह लाख जीवित जातियों के वैज्ञानिक नाम रखे जा चुके हैं।
09. ''जान रे'' ने जाति शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया।
10. इश्चिरीचिया कोलाई मनुष्य की आंत में पाया जाने वाला जीवाणु है।
11. स्पाइरोगाइरा को तालाब का रेशम कहते हैं।
12. सबसे बड़ा पक्षी अरेबिया एवं अफ्रीका का शुतुरमुर्ग है।
13. सन् 1911 में फंक ने विटामिन की खोज की।
14. आयोडीन की कमी से गॉइटर रोग हो सकता है।
15. सबसे बड़ा दिन 21 जून तथा सबसे छोटा दिन 22 दिसम्बर को होता है।
16. चन्द्रमा पृथ्वी से $3.5X10^{5}$ मीटर दूर है।
17. सूर्य की आयु $4.6X10^{9}$ वर्ष है।
18. सूर्य का व्यास $1.4X10^{6}$ किमी. है।
19. सूर्य का द्रव्यमान $1.989X10^{30}$ कि.ग्रा. है।
20. सूर्य की पृथ्वी से दूरी 14.98 करोड़ किमी. है।

– **रेणुका राजपूत,**
कक्षा–11 (जीवविज्ञान)

व्यक्तित्व क्या है?

हम हमेशा यह बोलते और सुनते रहते हैं कि हमारा व्यक्तित्व अच्छा होना चाहिए, व्यक्तित्व का विकास होना चाहिए आदि, ये बातें हमेशा व्यक्तित्व के बारे में होती रहती हैं। व्यक्तित्व आखिर है क्या?

व्यक्तित्व मनुष्य के विचारों की प्रतिकृति है, जैसा हम सोचते हैं, हमारा व्यक्तित्व भी वैसा ही होता है और विचार केवल मनुष्यों के मस्तिष्क में ही आते हैं और विचारों को व्यक्त भी केवल मनुष्य ही कर पाते हैं। मनुष्य का अर्थ ही है, जो मनन कर सके, तो क्यों ना हम अच्छे विचारों का मनन करें और अपना व्यक्तित्व निखारें; क्योंकि हम पक्षियों की तरह उड़ नहीं सकते, बन्दरों जैसी उछलकूद नहीं कर सकते, चीते जैसे दौड़ नहीं सकते। यहाँ तक कि यदि एक छोटा–सा मच्छर भी हमें काट लेता है, तो हम तिलमिला जाते हैं। फिर ऐसा क्या है, जो हमें सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बनाता है। कहा भी गया है कि मनुष्य प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ कृति है और देवता भी मानव–जन्म लेने के लिए आतुर रहते हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरित मानस में कहा है कि –

बड़े भाग मानुष तन पाया, सुर दुर्लभ सब ग्रन्थन गावा।

और हमें सर्वश्रेष्ठ बनाता है–हमारा मन, विचार और कर्म। ये तीन चीजें ही हैं, जो मनुष्य की श्रेष्ठता को दर्शाती हैं और सिद्ध करती हैं।

अतः, अन्त में हमें अपने मन को, विचारों को और कर्म को श्रेष्ठ रखना चाहिए, जिससे मानव–जन्म सर्वश्रेष्ठ बने और हमारा व्यक्तित्व निखरे, तो यही व्यक्तित्व है। मुझे लगता है कि अब आप सब समझ गये होंगे कि व्यक्तित्व आखिर होता क्या है।

मेरे विचार में व्यक्तित्व का ऐसा तत्त्व, जो प्रत्येक मानव को आदर्श बनाये रखने हेतु आवश्यक है; व्यक्तित्व कहलाता है।

आज हमारे देश, समाज व राष्ट्र को सर्वाधिक आवश्यकता है, आदर्श व्यक्तित्व की। आदर्श व्यक्तित्व के अभाव में ही समाज का घिनौना रूप हमारे सामने आता है, जिसे हम रोजमर्रा के दैनिक समाचार पत्रों में पढ़ते हैं।

इसलिए आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण के लिए, राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए आदर्श परिकल्पना को साकार रूप देने के लिए बच्चों को नैतिक शिक्षा देना, महापुरुषों की जीवनी व संस्मरण पढ़ने की प्रेरणा देना, उनकी ऊर्जा को सही दिशा में लगाना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा समाज का जो कलुषित रूप हमारे सामने आ रहा है, उसके और भयावह स्वरूप को देखना हमारी मजबूरी बन जायेगा, इसलिए उठो, जागो, सोचो, अब भी समय है।

– रेणु श्रीवास्तव, (उ.श्रे.शिक्षक)

स्वतन्त्रता दिवस पर डॉल्फिन स्कूल में रंगारंग प्रस्तुतियों देते हुए नन्हे–नन्हे बच्चे

बच्चों की कलम

अपना हिन्दुस्तान कहाँ है

भूमण्डलीकरण के युग में, अब अपनी पहचान कहाँ है?
आओ खोजें सकल विश्व में, अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?
भूमण्डलीकरण के मद में, हम सब कैसे झूम रहे हैं।
टी.वी., टेलीफोनों से ही, सारी दुनिया घूम रहे हैं।
साक्षरता का आन्दोलन है, चिन्तन का विस्तार कहाँ है?
जन–जन में जो फैल रही, उस शिक्षा में संस्कार कहाँ है?
बड़ी–बड़ी खोजें सकल विश्व में, अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?
आओ खोजें सकल विश्व में, अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?
महानगर में गगन चूमते, ऊँचे–ऊँचे भवन खड़े हैं।
बड़े–बड़े भवनों में झाँकें, तो टूटे परिवार पड़े हैं।
टी.वी., टेलीफोन बज रहे पर, आपस में तो बात बन्द है।
अबकी कविता लगती जैसे, परिवारों का भंग छन्द है।
जन्म–जन्म के बन्धन वाला, बोलो दैव विधान कहाँ है?
आओ खोजें सकल विश्व में, अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?
यन्त्रों की ताकत के भीतर, मन्त्रों का मृदु घोष कहाँ है?
धन से कोष भरे हैं, लेकिन फिर भी वह सन्तोष कहाँ है?
राजनीति की कूट–चाल में, जनसेवा का भाव कहाँ है?
राम–राज में जरा बताओ, केवट की वह नाव कहाँ है?
कितने ही अपहरण हो रहे, किन्तु कहो हनुमान कहाँ है?
आओ खोजें सकल विश्व में, अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?
कविकुल गुरु की सृजन शक्ति का, वह पावन संस्कार कहाँ है?
फूहड़ गीतों में खोया जो, मधुरस श्रृंगार कहाँ है?
मन को जो आन्दोलित कर दे, कविता की वह धार कहाँ है?
भोजराज की कविता वाला, वह वैभव–विस्तार कहाँ है?
तुलसी–सूर–निराला–दिनकर, औ रहीम–रसखान कहाँ है?
आओ खोजें सकल विश्व में, अपना हिन्दुस्तान कहाँ है?

– **अभिलाषा दाँगी,** कक्षा 9

मेरे पापा आप हो सबसे खास

जब मैं छोटी थी, अँधेरे से बहुत डरती थी।
वो मेरे पापा ही हैं, जिन्होंने मुझे अँधेरों से लड़ना सिखाया।
जब मुझे लगा मैं गिरने वाली हूँ,
मेरे पापा ने ही मेरा हाथ थामा।

जब मैं पहली बार स्कूल गयी थी।
मेरे पापा ने सिखाया था मुझे, जूते के फीते बाँधना।
जब मैं निराश होती थी,
मेरे पापा ने सिखाया था मुझे, खुद को कभी कम न आँकना।

और भी कितनी ही चीजें, जो आज मेरे काम आयी है
जो मैंने पापा आपकी बदौलत पायी है।

उस कल से सुनहरे आज में, मैं आपकी ही खातिर आ रही हूँ।
आपने जो सच्चाई का रास्ता दिखाया, उसी पर चल रही हूँ।
हारूँगी न मैं कभी, जीत के लिए खड़ी हूँ।
पापा मैं जानती हूँ, मैं आपकी परी हूँ।
मैंने पापा कभी नहीं कही, आपसे जो बात,
आज कहना चाहती हूँ, मेरे पापा आप हो सबसे खास।

– रानी शर्मा, कक्षा 9

बेटियाँ

आँसू नहीं वह मोतियों की लड़ी है,
आँगन में जिनके बेटी खड़ी है।
हँसी से उसका घर दमकता है,
जैसे हीरे की कनी, सोने में जड़ी है।
सिर को दबाती, हाथ भी बँटाती है,
माँ के साथ वह रसोई में खड़ी है।
कलाई में भइया के संसार को बाँधे,
खुशियों की वह अनमोल घड़ी है।
गुड्डे–गुड़ियो के खेल में जो डूबी है,
घूँघट में जैसे परी, नन्ही खड़ी है।
जायेगी एक दिन डोली में बैठकर,
आँसुओं में भी, खुशियों की झड़ी है।
जोड़ेगी जब दो घरों को, जो बहू बनकर
मर्यादा की वह मजबूत कड़ी है।
माँ से बेटी का यह ममत्व का रिश्ता
जिस्म से जैसे हर साँस जुड़ी है।

– **अंजली नामदेव,** कक्षा 9 अ

पिता

मेरा साहस, मेरी इज्जत, मेरा सम्मान हैं पिता।
मेरी ताकत मेरी पूँजी, मेरी पहचान हैं पिता।

घर की एक–एक ईंट में शामिल उनका खून–पसीना,
सारे घर की रौनक उनसे, सारे घर की शान हैं पिता।

मेरी इज्जत मेरी शोहरत मेरा रुतबा मेरा मान हैं पिता।
मुझको हिम्मत देने वाले मेरा अभिमान हैं पिता।

सारे रिश्ते उनके दम पे, सारे नाते उनसे हैं।
सारे घर के दिल की धड़कन, सारे घर की जान हैं पिता।

शायद रब ने देकर भेजा, फल ये अच्छे कर्मों का।
उसकी रहमत, उसकी नेमत, उसका वरदान है पिता।

– **कु. केशु जैन,**
कक्षा 10

गिद्ध करते हैं सिद्ध

धरती से मिटते गिद्ध, यही करते हैं सिद्ध।
कि मानव भटक गया, कि मानव भटक गया।।
हवा हुई जहरीली, नदियाँ हुई विषैली,
पर्यावरण का रक्षक, ओजोन का परदा भी चटक गया।।
धरती से मिटते गिद्ध, यही करते हैं सिद्ध।
कि मानव भटक गया, कि मानव भटक गया।।

अन्धाधुन्ध जला पेट्रोल, दूषित हुआ धरा का खोल,
वायु प्रदूषण पौधों की हरियाली को भी गटक गया।।
धरती से मिटते गिद्ध, यही करते हैं सिद्ध।
कि मानव भटक गया, कि मानव भटक गया।।
धरती खोदी, अम्बर छाना, लालच का सब ताना–बाना,
एक राष्ट्र जब करे परीक्षण, औरों को यह खटक गया।।
धरती से मिटते गिद्ध, यही करते हैं सिद्ध।
कि मानव भटक गया, कि मानव भटक गया।।

हवा में बढ़ती CO_2 से, वातावरण का ताप बढ़ा,
ताल–तलैया मिटे धरा से, और हिमालय झटक गया।।
धरती से मिटते गिद्ध, यही करते हैं सिद्ध।
कि मानव भटक गया, कि मानव भटक गया।।
मोर–गौरैया, तोता–मैना, कछुआ–मेंढक लगभग हैं न,
पर्यावरण का एक घटक, लगता है सर पटक गया।।
धरती से मिटते गिद्ध, यही करते हैं सिद्ध।
कि मानव भटक गया, कि मानव भटक गया।।

सुनामी, अलनीनो आया, मानव पर जो कहर बरपाया,
धरती को इठलाता देख के, आसमान भी मटक गया।।
धरती से मिटते गिद्ध, यही करते हैं सिद्ध।
कि मानव भटक गया, कि मानव भटक गया।।

–कु. रिया रघुवंशी, कक्षा–11 गणित

ALPHABETS

Alphabets are so intelligently aranged .... they so you the way of life.... "**A**lways **B**e **C**ool **D**ont have **E**go with **F**riends & family. **G**ive up **H**urting **I**ndividuls. **J**ust **K**eep **L**oving **M**ankind **N**ever **O**mit **P**rayes **Q**uietly **R**emember god. **S**peak **t**ruth. **U**se **V**alid **W**ords **X**press **Y**our **Z**eal.

Mrs. Rashmi Shrivastava

सुखी कौन..... ?

एक कौआ जंगल में रहता था और वह अपनी जिन्दगी से सन्तुष्ट था। एक बार उसने एक हंस को देखा और सोचा कि यह कितना सफेद है और मैं कितना काला। यह हंस ही संसार का सबसे सुखी पक्षी है। उसने अपने विचार हंस को बताये, तो हंस बोला कि पहले मैं भी यही सोचता था, पर जब मैं तोते से मिला, तो मैंने सोचा कि तोता ही संसार का सबसे सुखी पक्षी है; क्योंकि उसके दो रंग हैं। उसके बाद कौआ तोते के पास गया और उससे कहा कि तुम संसार के सबसे सुखी पक्षी हो, क्योंकि तुम्हारे पास दो रंग हैं। तोते ने कहा, मैं जब तक मोर से नहीं मिला था, जब तक मैं यही सोचता था; लेकिन मोर मुझसे भी ज्यादा सुखी है, क्योंकि उसके पास कई रंग हैं और वह बहुत सुन्दर दिखता है। कौआ फिर मोर के पास एक चिड़ियाघर में गया और मोर से बोला कि तुम संसार के सबसे सुखी पक्षी हो, क्योंकि तुम बहुत सुन्दर दिखते हो। मोर ने कहा कि मैं सुन्दर तो दिखता हूँ, पर मैं सोचता हूँ कि कौआ ही सबसे सुखी पक्षी है; क्योंकि मेरी सुन्दरता के कारण मुझे चिड़ियाघर में रखा गया है। लोग मुझे परेशान करते हैं, मैं स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन नहीं जी पाता। कौआ सबसे सुखी है, क्योंकि वह अपना जीवन जंगल में स्वतन्त्रता पूर्वक जी पाता है।

ठीक यही, हमारे साथ होता है। हम अपने गुण नहीं देखते, दूसरों को देखकर दुःखी होते हैं। ईश्वर ने हमें क्या दिया है, यह देखकर खुश नहीं होते, बल्कि यह देखकर दुःखी होते हैं कि ईश्वर ने दूसरों को क्या दिया है! तो इस सप्ताह के अन्त में भगवान् ने जो आपको दिया है, उसे खोजिये और और खुश रहने के तरीके सीखिये।

–कु. रंजना अहिरवार, कक्षा 9

आदर्श विद्यार्थी बनने के सोलह सूत्र

01.	सम्मान	–	अपने माता–पिता, गुरुजनों एवं वरिष्ठजनों को सम्मान दें।
02.	स्नेह	–	अपने देश, संस्कृति,, और बुजुर्गों से प्यार करे।
03.	सेवा	–	असहाय, अशिक्षित और बीमार की सेवा करें।
04.	अनुशासन	–	अपने तन, मन और इन्द्रियों को अनुशासित करें।
05.	नियन्त्रण	–	अपने शब्दों, विचारों और कार्यों को नियन्त्रित करें।
06.	विश्वास	–	स्वयं पर एवं अपने आराध्य पर विश्वास रखें।
07.	विभेदन	–	अच्छे–बुरे, सही–गलत और असल–नकल में भेद रखें।
08.	एकाग्रता	–	अपनी शिक्षा, कार्य, खेल और आराधना करते समय एकाग्रचित्त रहें।
09.	सत्यता	–	अपने शब्द, कर्म और कार्यों में सत्यवादी बनें।
10.	परिश्रम	–	ज्ञान, शक्ति और बुद्धि अर्जित करने के लिए कठिन परिश्रम करें।
11.	शक्ति	–	तन, मन, ज्ञान, आत्मिक एवं आध्यात्मिक रूप से शक्तिशाली बनें।
12.	आस्था	–	अपने आराध्य और ईमानदारी पर सदैव भरोसा रखें।
13.	समर्पण	–	अपने इष्ट, कार्य और कर्त्तव्यों के प्रति समर्पित रहें।
14.	आदत	–	स्वाध्याय, अध्ययन, योग और नियम को अपने जीवन में धारण करें।
15.	दृष्टि	–	अपने आराध्य की शक्ति को स्वीकारें, उसका सभीजनों में दर्शन करें।
16.	संकल्प	–	ज्ञान, अर्जन, शान्ति, समृद्धि और सफलता के लिए दृढ़ संकल्पित हो।

–**देवेन्द्रसिंह राठौर,** कक्षा 12 (गणित)

आवाजें क्यों अलग–अलग होती हैं?

आपने अपने आस–पास कई लोगों को देखा और सुना होगा। सबकी आवाज अलग–अलग होती है। किसी की आवाज मोटी होती है, तो किसी की बहुत पतली। इस अन्तर का मुख्य कारण है मनुष्यों में आवाज उत्पन्न करने वाले अंग, जो गले में मौजूद होते हैं, इन्हें स्वर कोष्टक कहते है। इनमें स्वर– तन्तु उपस्थित होते हैं, जिनके कम्पन से ध्वनि निकलती है। स्वर का पतला या मोटा होना, इन तन्तुओं की मोटाई और लम्बाई पर भी निर्भर करता है, वहीं तन्तुओं से निकलने वाली ध्वनि मुँह में मौजूद जीभ और होठों की बनावट तथा उनको चलाने से अलग–अलग तरह के कारण भी एक–दूसरे से अलग करते हैं। आवाज के मुख्य तीन घटक होते हैं– आवाज की तीव्रता, आवृत्ति और विशिष्ट सांगीतिक स्वरूप। किसी व्यक्ति के लिए इन तीनों का संयोजन विशिष्ट होता है। चूँकि यह संयोजन हर व्यक्ति का अलग होता है, इसलिए भी व्यक्ति किसी की आवाज की हूबहू नकल नहीं कर पाता है।

– **कु. गीतिका कुशवाह**, कक्षा–12 (वाणिज्य)

क्या आप जानते हैं

01. दिमाग को 5 से 10 मिनिट तक ऑक्सीजन न मिले तो वह हमेशा के लिए खराब हो सकता है।
02. जैसे ही आप कोई नयी मैमोरी रखते हैं, दिमाग के सभी कनेक्शन फिर से बनते हैं।
03. हमारे दिमाग में हर रोज लगभग 70 हजार विचार आते हैं।
04. दिमाग शरीर के ऑक्सीजन और खून का लगभग 20 प्रतिशत इस्तेमाल करता है।
05. दिमाग खुद दर्द महसूस नहीं कर सकता, इसलिए कई बार मरीज के जागते हुए भी ब्रेन–सर्जरी की जाती है।
06. जब हम जागते हैं, तो हमारा दिमाग इतनी ऊर्जा पैदा करता है, जिससे एक छोटे बल्ब को जलाया जा सकता है।
07. सोते समय हमारा दिमाग ज्यादा एक्टिव रहता है, दिमाग तब भी चल रहा होता है। नींद पूरी न होने से दिमाग नयी चीजों को याद रखने की शक्ति खो देता है।

— **निहारिका मुराब**,
कक्षा 12 गणित

बूझ पहेली मोरी

1. पहले हती मैं मोटी–भारी, तब सहती मार।
   अब मैं पहनी लाल घघरिया, अब न सैहों मार।
2. गहरे जल में घड़ा न डूबे, हाथी खड़े नहाय।
   गोड़ मूँड से पीयर भीजै, बैल पियासो जाय।
3. कारी मैं बदरा न होय, दो जिहा नागन न होय।
   पंचपति द्रोपदी न होय, जो जाने सो पण्डित होय।
4. औंधा कुआँ, किलकारी मारें।
5. एक चिरैया ऐसी है, बोले मधुर बानी।
   बीच समुन्दर डुबकी मारे, ऊपर से माँगे पानी।
6. काली गाय, काटा खाय, पाणी देखी बिचकी जाय।
7. पेड़ न पत्ता, ऊपर बड़ा छत्ता।
8. गाय चलती जाय, दूध पड़तो जाय।
9. चाँद सा मुखड़ा सब तन जख्मी,
   बिना पैर वह चलता है।
   सबका प्यारा राजदुलारा, साल–साल में बढ़ता है।

— **गीतिका कुशवाह**, कक्षा 12 (वाणिज्य)

उत्तर 1. पकी हुई गागर, 2. ओस, 3. कलम, 4. भैंस के गले मे बांधने वाली घंटी, 5. मथानी, 6. जूते, 7. अमरबेल, 8. चक्की, 9. पैसा,

समाजसेवी श्री कांतीभाई जी शाह द्वारा विद्यालय के निर्धन बच्चों के सहायतार्थ 10000/–रु. की राशि का चैक प्रदान किया गया।

नवांकुर में पूर्व छात्रों का मिलन समारोह आयोजित

दिनांक 08.09.2014। विगत दिवस नवांकुर परिसर में सत्र 2008 बैच के पूर्व छात्र–छात्राओं द्वारा शिक्षकों के सम्मान में एक मिलन–समारोह का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के 30 वरिष्ठ शिक्षक–शिक्षिकाओं के सम्मान का आयोजन किया गया। सभी छात्र–छात्रा अपनी विद्यालयीन स्मृतियों को जीवन्त करते हुए विद्यालय के मैदान से कार्यक्रम–स्थल तक कतार बद्ध होकर गये। तत्पश्चात् सभी शिक्षकों द्वारा सरस्वती–पूजन एवं वन्दन का कार्यक्रम किया गया। नवांकुर की सेवानिवृत्त शिक्षिका श्रीमती माया देवी शर्मा ने सभी छात्र–छात्राओं की पूर्व की भाँति उपस्थिति ली। इस अवसर पर छात्र–छात्राओं द्वारा बारी–बारी से सभी शिक्षकों का पुष्प–गुच्छों से हार्दिक स्वागत किया गया। जब छात्र–छात्राओं ने कार्यक्रम में अपने विद्यालय–जीवन के अनुभव सुनाये, तब सबकी आँखें उन बीते दिनों की स्मृति में नम हो गयीं। विद्यालय की पूर्व शिक्षिका सुश्री सुषमा याज्ञनिक ने ''बच्चे मन के सच्चे'' गीत गाया, जिसकी सभी ने सराहना की। इस दौरान सभी शिक्षकों को स्मृति–चिह्न भेंट किये गये। प्राचार्य शैलेन्द्र दीक्षित ने सभी छात्र–छात्राओं को आशीर्वाद देते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन से विद्यालय परिवार अभिभूत है। नवांकुर एक वटवृक्ष बन चुका है, जिसमें 4000 विद्यार्थी और 160 शिक्षक–शिक्षिकाएँ हैं। उन्होंने पूर्व छात्र–छात्राओं से कहा कि वे नवांकुर के लिए संगठित होकर आगे आयें और विद्यालय के निर्धन–वर्ग के छात्र–छात्राओं की मदद करें तथा कैरियर– मार्गदर्शन आदि कार्यक्रमों के लिए आगे रहें। विद्यालय–परिवार के शिक्षकों द्वारा भी छात्र–छात्राओं को उपहार प्रदान किये गये। विद्यालय के पूर्व छात्र व शिक्षक तथा वर्तमान में प्रसार– भारती–कार्यालय, मुम्बई में कार्यरत आशीष त्रिवेदी और सुरभि माहेश्वरी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

बोर्ड परीक्षा में जिला प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थी शासन द्वारा पुरस्कृत

बोर्ड परीक्षा में जिला प्रावीण्य सूची में स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को जिलाधीश महोदय एवं जिला शिक्षाधिकारी द्वारा पुरस्कृत किया गया।

सुन्दर व्यक्तित्व की पहचान, वाणी में मिठास

मनुष्य के व्यक्तित्व ही पहचान उसके बातचीत करने के ढंग से होती है। भले ही कोई व्यक्ति कितना ही सुन्दर क्यों न हो परन्तु वाणी में कर्कशता या रुखापन हो तो वह कभी किसी को अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकता। इसके विपरीत सामान्य–सा दिखने वालो व्यक्ति यदि सौम्य है और उसकी वाणी में मिठास है तो वह सहज ही सबको अपनी ओर आकर्षित कर लेगा। उचित–अनुचित का ज्ञान रखकर बोलने से आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली बन सकता है। इसलिए आवश्यक है तोल–मोल के बोलना कुछ इस तरह –

- अपनी आवाज पर ध्यान दें, बहुत ऊँचे स्वर में चिल्ला–चिल्लाकर न बोलें।
- बोलते समय विषय का पर्याप्त ज्ञान हो इसका ध्यान रखें।
- बिना सोचे–विचारे कभी न बोलें। बोलते समय अवसर व स्थान का विशेष ध्यान रखें। बाजार–अस्तपताल आदि में धीरे बोलें।
- दो लोगों के बीच कभी न बोलें। न ही बिन माँगें अपनी सलाह दें।
- दूसरों की बात ध्यान से सुनें, तभी बोलें। साथ ही उनकी रुचि का भी ध्यान रखकर बोलें।
- बोलते समय बेवजह न हाथ नचाएं, न आंखें मटकाएं, न दूसरों को छुएं, या हाथ मारें।
- कुछ खाते हुए कभी न बोलें। बोलते समय थूक के छींटें दूसरों पर न उड़ाएं।
- किसी दूर खड़े व्यक्ति से दूर से ही चिल्लाकर बात करने के कोशिश न करें, पास जाकर बात करें।
- बच्चों के स्कूल में उनकी अध्यापिकाओं आदि से शिष्टाचार में बात करें।
- बच्चों के सामने उनके टीचर्स व रिश्तेदारों के लिए अपशब्द न कहें।
- अपने उच्चाधिकारी होने का मान करते हुए अपने मातहतों को तुच्छ न समझें।
- सेवक या किसी भी बाहरी व्यक्ति से अपने घर की अंदरुनी बात कभी न करें।
- अपनी गलत बात को सिद्ध करने के लिए बहस न करें। न ही चिल्ला–चिल्लाकर उसे सही सिद्ध करने के कोशिश करें।
- किसी के मुँह से निकली बात को मजाक न बनाएं, अन्य लोगों के सामने किसी की खिल्ली न उड़ाएं; न किसी को शर्मिन्दा करें।
- एक–दूसरे की बात इधर–उधर न करें, एक कान से सुनें व दूसरे से निकाल दें।

(आचरण से साभार)

नन्ही-कूची

रितिक दाँगी
कक्षा 9–ई

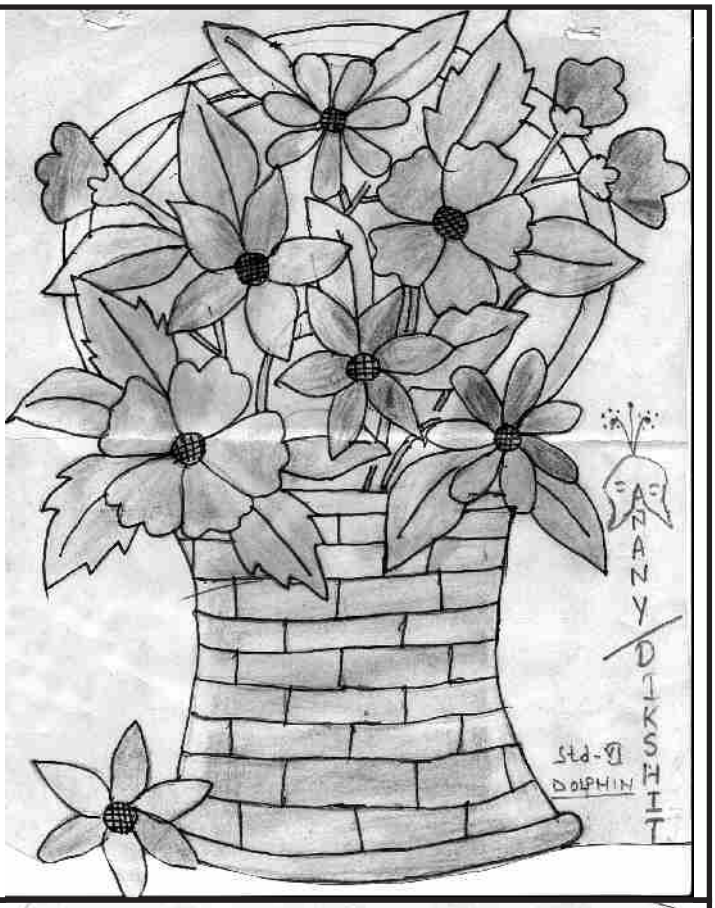

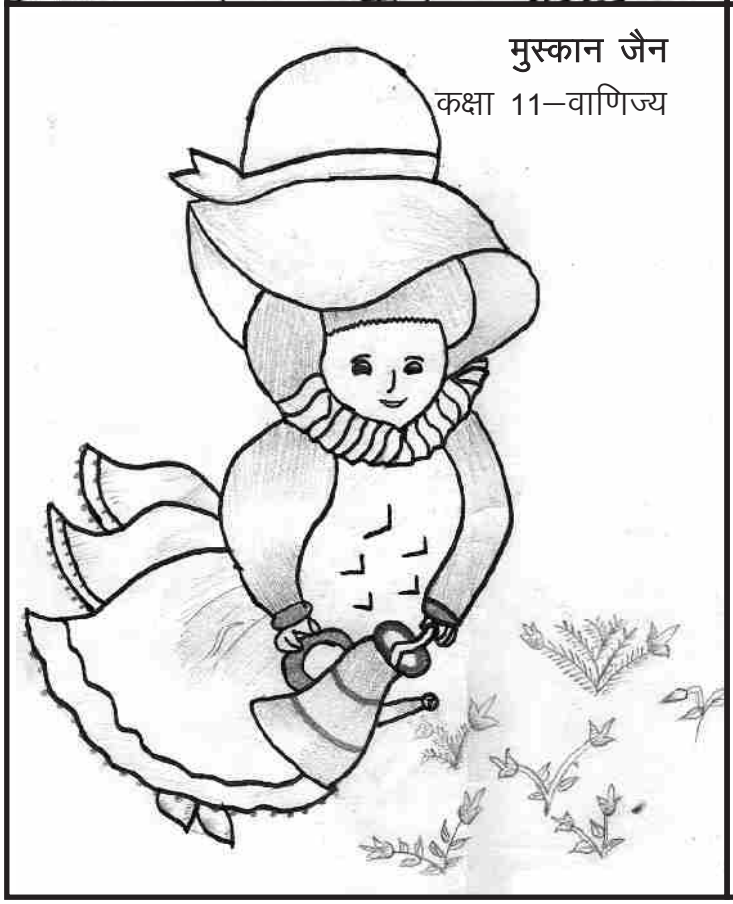

मुस्कान जैन
कक्षा 11–वाणिज्य